थाली भरकर लाई रे खींचड़ो ....

थाली भरकर लाई रे खींचड़ों, ऊपर घी की बाटकी,
जीमो म्हारा श्याम धणी, जिमावे बेटी जाट की।
करमा बेटी जाट की, आ करमा बेटी लाडकी।।
जीमों म्हारा ....

बाबो म्हारो गाँव गयो है, ना जाणे कद आवेला,
उणरे भरोसे बैठो साँवरां, भूखो ही रह जावेला।
आज जिमाऊँ थने खींचड़ो, काल राबड़ी छाछ की।।
जीमों म्हारा ....

बार–बार मंदिर ने जड़ती, बार–बार पट खोलती,
कईयाँ कोनी जीमे रे मोहन, करड़ी–करड़ी बोलती।
तू जीमें जद मैं जीमूली, मानूँ ना मैं लाट की।।
जीमों म्हारा ....

गरजाँ करती–करती करमा, भैरूरी बिलिया व्है गई,
क्यूं तरसावे थाली साँवरा, कांई गलती व्है गई।
छप्पन भोग जीमता थाँरी, आदत पड़ गई चाट की।।
जीमों म्हारा ....

परदो भूल गई साँवरिया, परदो फेर लगायो जी,
धाबलिया री ओट बैठकर, श्याम खीचड़ो खायोजी।
भोला भाला भक्तां सूं साँवरियो, कैय्यां आँट की।।
जीमों म्हारा ....

भक्ति हो तो करमा जैसी, साँवरियो घर आवेला,
सबही मिलकर हरष–हरष कर, प्रभुजी रा गुण गाँवाला।
साचो प्रेम प्रभु से हो तो, मूरत बोले काठ की।।
जीमों म्हारा ....